''उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं की पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का एक अध्ययन''

(अमरोहा जनपद के संदर्भ में विशेष अध्ययन)

शिक्षाशास्त्र में पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका :

JV'n डॉ. मंजू शर्मा

शोधार्थी :

JV'n आसमा खातून

ENROLLEMENT NO. JVR-I/19/1015

शिक्षा एवं प्रविधि विभाग

शिक्षा एवं प्रविधि संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

जनवरी 2019

—: अनुक्रमणिका :—

क्रम.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	शोध की पृष्ठभूमि	01 — 03
2.	अध्ययन का औचित्य	03 — 04
3.	संबंधित साहित्य का अध्ययन	04 — 07
4.	शोध प्रश्न	07 — 07
5.	समस्या कथन	07 — 07
6.	अध्ययन के उद्देश्य	08 — 08
7.	चर	08 — 10
8.	परिकल्पना	11 — 11
9.	शोध का परिसीमन	11 — 12
10.	अध्ययन विधि	12 — 12
11.	जनसंख्या का चयन	12 — 12
12.	प्रतिदर्श	12 — 12
13.	शोध उपकरण	12 — 12
14.	सांख्यिकी विधियां	12 — 12
15.	सन्दर्भसूची	13 — 15

शोध की पृष्ठ भूमि

बालक के सर्वांगीण विकास में केवल विद्यालयी अनुशासन की ही नहीं अपितु पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है तथा उसकी प्रथम अध्यापिका उसकी माता मानी जाती है। बालकों व बालिकाओं के चरित्र, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं माता–पिता के आपसी सम्बन्धों का सीधा प्रभाव बालकों के व्यवहारों पर पड़ता है। इस दिशा में किये गये विभिन्न शोध कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रूप में स्थापित होती है कि घर में अभिभावक बालकों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखते हैं, बालक तथा बालिकाओं का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर भी अवश्य पड़ता है। आमतौर पर प्रत्येक परिवार के बालकों तथा बालिकाओं के साथ अभिभावक विभिन्न प्रकार के व्यवहार, उनको अनुशासन में रखने के लिए करते हैं।

विशेष रूप से तीन प्रकार के अनुशासन को प्रयोग में लाया जाता हैः–

1. दमनात्मक अनुशासन

2. प्रभावात्मक अनुशासन

3. मुक्त्यात्मक या हस्तक्षेप रहित अनुशासन।

उपर्युक्त अनुशासन की ये विचारधाराएं अभिभावकों तथा अध्यापकों दोनों के लिए लागू होती है। बच्चों के दृष्टिकोण से अभिभावकों द्वारा लागू की गई अनुशासन प्रणाली अधिक महत्वपूर्ण है। एक ओर अध्यापक उस अनुशासन प्रणाली का पालन करता है जोकि प्रशासनिक दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी हो, तो दूसरी ओर अभिभावक उस प्रणाली का पालन करते है जो उनके घर की व्यवस्था को सुचारू बनायें रखने तथा बालकों एवं बालिकाओं के विकास की दृष्टि से उपयोगी हो। यद्यपि दोनों का उद्देश्य अपने–अपने तरीकों से विद्यार्थियों का विकास करना ही है। इस सन्दर्भ में कुछ अभिभावकों का ध्यान पूरे परिवार की व्यवस्था पर अधिक होता है। हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार विद्यार्थी को बड़ा गौरवमयी स्थान दिया गया है परन्तु भारतीय परिवारों में विद्यार्थियों को एक औसत सम्मान की दृष्टि से देखा जा सकता है। अधिकांश परिवारों में अभिभावक बालक को छोटी–छोटी बात पर झिड़कते, गालियाँ देते है और उन्हें मारपीट तक भी करते हैं इस प्रकार के दमनात्मक अथवा एकाधिकारात्मक व्यवहार से बालक के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वह अन्तर्मुखी हो जाता है और जिन कार्यों से उसको माता–पिता रोकते है, उनको वह स्वप्नों दिवास्वपप्नों और कल्पनाओं से पूरा करने का विार करता है। माता–पिता की अवहेलना और प्रताड़ना से विद्यार्थी अर्थात् बालक अन्तर्मुखी तो बनता ही बनता है, उसके साथ बच्चा दबंग व उद्दण्डी भी हो सकता है। इस प्रकार बालक में स्वतंत्र रूप से निर्णय करने की योग्यता का समुचित विकास नहीं हो पाता है, जो कि वयस्क आयु में जीवन संघर्ष में अत्यंत आवश्यक होता है। यदि बालक अपने कार्यों एवं वस्तुओं का चुनाव स्वयं करे, स्वयं निश्चित करे कि उसे क्या खाना है, क्या पहनना है, कौन–कौन सी पुस्तकें पढ़नी है, क्या–क्या कार्य करने हैं आदि कार्य करने की शक्ति उसमें

उत्पन्न होती है, परन्तु यदि ये सब उसके माता–पिता निश्चित करें, तो उसे अपनी निर्णय शक्ति के उपयोग का अवसर ही नहीं मिलता है। इस प्रकार माता–पिता द्वारा अत्यधिक प्रताड़ित किये जाने वाले बालकों को जीवन में अनेक प्रकार की सामाजिक तथा व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके साथ–साथ जो अभिभावक बच्चों को अधिक दुलार करते हैं, वे बच्चे भी अधिक बहिर्मुखी होने के साथ–साथ माता व पिता पर अधिक आश्रित हो जाते हैं और इस प्रकार उनका विकास भी पूरी तरह सन्तुलित नहीं हो पाता है। अतः अभिभावकों द्वारा अधिक डांटने अर्थात् प्रताड़ित किये जाने वाले और आवश्यकता से अधिक प्यार किए जाने वाले दोनों तरह के बालकों में व्यक्तित्व संबंधी उलझने अर्थात् समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। व्यक्तित्व की उलझनों को दूर करने के उद्देश्य से व्यवहार चिकित्सालयों में लाये गये बालकों में बहुत से बालकों की व्यक्तित्व संबंधी परेशानियों का कारण उनके प्रति उनके माता–पिता का व्यवहार ही होता है। इसी प्रकार जो अभिभावक अपने बच्चों को आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, उन बच्चों के उद्दण्डी व दबंग बनने की पूरी सम्भावना रहती है, जो उसके भविष्य के लिए नुकसानदेह होती है। अतः अभिभावकों को बच्चों के साथ सन्तुलित व्यवहार करना चाहिए, जिससे बालक का सन्तुलित विकास हो सके और उसकी शिक्षा व्यवस्था पर सार्थक प्रभाव पड़ सके।

सिगमण्ड फ्रायड ने इस विषय में तादात्म्य के तत्व पर अधिक जोर दिया है। माता–पिता बच्चों से अधिक शक्तिशाली एवं कार्यशील होते हैं। अतः बच्चे के सामने वे एक आदर्श के समान होते हैं। बच्चा भी उन जैसा बनना चाहता है। इस प्रकार बच्चा माता–पिता में से किसी भी व्यक्तित्व के साथ अपने से तादात्मय स्थापित कर लेता है।

परिवारों के प्रतिमानों में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, वे भारतीय संस्कृति की गतिशीलता के द्वारा हुए है। स्त्रियों और पुरूषों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन हुए है। परिवार का आकार दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। गांवों की अपेक्षा शहरों के परिवार अधिक छोटे होते जा रहे हैं। बच्चों पर भी आजकल परिवार का उतना नियन्त्रण नहीं रहा, जितना होना चाहिए, क्योंकि आजकल परिवार के प्रत्येक सदस्य अपने–अपने कार्यों व व्यवसाय आदि में अधिक व्यस्त रहते हैं। बच्चों पर पूर्णतः ध्यान नहीं रख पाते हैं। व्यावसायिक कार्यकलाप अधिक होने के कारण आज परिवार की संरचना में परिवर्तन आ रहा है। बालकों की शिक्षा की ओर अभिभावक अधिक ध्यान रखते हैं, इसका कारण है–देश में बढ़ती बेरोजगारी व सुविधाओं का अभाव। अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान तो काफी देते हैं लेकिन उन्हें चिंता इस बात की रहती है कि लिखने–पढ़ने के बाद भी रोजगार मिलेगा या नहीं।

अध्ययन का औचित्य :–

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को विशेष ढांचे में ढाला जाता है तथा बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इन परिवर्तनों में शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रयोग जाता है। परिवार को शिक्षा का एक अनौपचारिक साधन माना गया है। बालक एक छोटे पौधे के समान होता है, उसके

फलने–फूलने के लिए जितना खुला व स्वाभाविक वातावरण व अनुशासन मिलेगा, वह उतना ही उत्तम पल्लवित होगा। उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चे किशोरावस्था के आस–पास होते हैं, वह अधिकांशतः अपना निर्णय स्वयं लेते हैं। उनके व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों पर अनुशासन के प्रकार का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जैसे– दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक तथा मुक्तयात्मक अनुशासन व्यवस्था। शोध में यह स्पष्ट करने की कोशिश की गई है कि हमारे परिवारों में जिस प्रकार की अनुशासनिक व्यवस्था प्रचलित है तथा उसका बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर कैसा प्रभाव पड़ेगा।

<u>सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–</u>

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन हमारी सहायता करता है कि अन्य शोधकर्ताओं ने सम्बन्धित समस्या के क्या हल निकाले है और कौनसे प्रश्न अभी अनुचरित रह गये है यह शोधकर्ता की मद इस विषय पर भी करता है कि कहीं वह पुनः उसी विषय की तथा सैंपल की पुनरावृत्ति न हो जाये यह पूर्व कल्पनाओं के साथ महत्वपूर्ण सुझाव देने में भी सहायक होता है जिससे शोधकर्ता को शोध करते समय आसानी से आकड़े उपलब्ध हो जाते है।

- भट्ट, सुधा (1991) –

''पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य :–

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

पाण्डे, आर0के0 (2000) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पूर्व किशोरावस्था की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकाले–

1. वे बालिकाएं जो घर में उच्च नियन्त्रण में रहती है। मध्यम नियन्त्रण वाली बालिकाओं की अपेक्षा उच्च शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्त करती है।

2. वे बालिकाएं, जिन्हें घरेलू वातावरण में संरक्षण एवं मध्यम स्तर का दण्डात्मक वातावरण मिलता है। विज्ञान में बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करती है।

3. जो बालिकायें घरेलू वातावरण में उच्च प्रोत्साहन पाती है। वे कम या मध्यम प्रोत्साहन पाने वाली बालिकाओं से विज्ञान में बेहतर उपलब्धि प्राप्त करती है।

बाला, निधि (2000)

''माता के व्यवसाय एवं परिवार की आय का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन ''

उद्देश्य :–

1. माता के व्यवसाय का बालको की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना

2. परिवार की आय का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. माता के गृहणी होने अथवा कामकाजी होने का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही होता है।

2. बालको के विकास में माता द्वारा दिए गये गुणात्मक समय का अधिक प्रभाव होता है। न कि अधिक मात्र समय दिये जाने का।

- पीटर, पॉल (2002)

''महाविद्यालय के चयन एवं उपस्थिति के प्रति अफ्रीकन, अमेरिकन एवं व्हाइट मेरी लेण्ड के माध्यमिक स्कूल के छात्रों की आका ंक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

महाविद्यालय चयन एवं उपस्थिति के प्रति माध्यमिक स्कूल के छात्रों की आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

उच्च माध्यमिक विद्यालय में उन्हें महाविद्यालय प्रवेश के लिए तैयार नहीं किया जाता और इस समस्या के हल के लिए विद्यालय एवं महाविद्यालय के बीच कोई निश्चित नीति निर्धारित करना आवश्यक पाया गया।

- शर्मा, मन्जू (2003)

''छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव, समायोजन एवं अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य :–

1. छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओ ं के पारिवारिक लगाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की अध्ययन आदतो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. छात्रावास व परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव में अन्तर पाया गया।

2. परिवार में रहने वाली छात्राओ ं की अपेक्षा छात्रावास में रहने वाली छात्राओं का समायोजन अच्छा पाया गया। यह अन्तर केवल भावात्मक समायोजन में पाया गया।

3. छात्रावास व परिवार में रहने वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- गुप्ता, मधु (2005)

''शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार की प्रकृति, पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावको की सहभागिता के प्रभाव का अध्ययन'' (शोधपत्र)

उद्देश्य :–

1. परिवार की प्रकृति (संयुक्त एवं एकल) का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना
2. परिवार की प्रकृति (संयुक्त एवं एकल) के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना
3. छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना
4. संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना
5. संयुक्त एवं एकल परिवार के अभिभावको की शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. अभिभावकों के शिक्षा में सहभागिता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. संयुक्त परिवार की छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि एकल परिवार की छात्राओ से अधिक पायी गयी।
2. छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
3. संयुक्त एवं एकल परिवार के अभिभावक समान सहयोग करते है अपनी बालिकाओ की शिक्षा में

छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके अभिभावको के सहयोग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाई देता है।

- **पहाड़ियाँ, के एल. (2006)**

''मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य :–

1. मादक पदार्थों का सेवन करने वाले एवं नहीं करने वाले परिवार के किशोरों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. इस प्रकार के परिवार के किशोरो की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन

निष्कर्ष :–

1. मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवार के किशोरों का समायोजन स्तर सामान्य परिवार के किशोरों की तुलना में कम पाया गया।

मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध नहीं पाया गया।

- ढ़िगड़ा, रजनी, मनहस, सारिका एवं सेठी, नीतू (2007)

''विद्यालय सम्बन्धि गतिविधियों में अभिभावकों की सहभागिता का अध्ययन''

उद्देश्य :–

1. घर व विद्यालय के आपसी सम्बन्ध के महत्व के बारे में अभिभावको के सुझाव ज्ञात करना
2. अभिभावको के द्वारा कक्षा अध्यापक से बच्चों की विद्यालय सम्बन्धि गतिविधिया ें के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने स्त्रोत का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. अभिभावक विद्यालय की गतिविधियों में सहभागी कम होते है।
2. बहुत कम संख्या मे अभिभावक विद्यालय के प्रशासनिक अथवा अन्य सुविधाओ से जुड़े होते है।
3. अभिभावक अधिकांशतः शैक्षिक उपलब्धि के प्रति ही जागरूक होते है।
4. माताओं का प्रतिशत अधिक पाया गया जो नियमित विद्यालय जाती है अपने बच्चो की उपलब्धि के सम्बन्ध मे जानने के लिए।
5. अभिभावकों का अध्यापको से विचार–विमर्श का मुख्य मुद्दा बालकों की शैक्षिक उपलब्धि ही होता है।

- वर्मा, जी. आर. एण्ड बाबू, बी. वी. (2007)

''सन परफॉरमेन्स एण्ड डिजायर्ड फैम`ली साईज इन ए रूरल कम्यूनिटी ऑफ वेस्ट गोदावरी डिस्ट्रीक्ट''

उद्देश्य :–

1. आन्ध्रप्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिलों के ग्रामीण परिवारो के लड़को की इच्छा रखने वाले उनके परिवार के आकार, सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. परिवार में बच्चों की संख्या का मध्यमान 2.5 आया।
2. आधे से अधिक लोगो ने कम से कम एक पुत्र होना ही चाहिए की इच्छा व्यक्त की।
3. 70 प्रतिशत पुरूष पहला बच्चा लड़का ही होना चाहिए के पक्ष मे थे।
4. 2 प्रतिशत पुरूष पहला बच्चा लड़की होनी चाहिए के पक्ष में थे।
5. 55 प्रतिशत महिलाएॅ पहला बच्चा लड़का होना चाहिए तथा 2.5 प्रतिशत महिलाऐं पहला बच्चा लड़की होनी चाहिए के पक्ष में थी।
6. पहला बच्चा लड़का ही होना चाहिए सोच रखने का कारण अशिक्षा पायी गयी।

- कुमार, हाकम (2009)

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एकल संतान व बहुसंतान परिवार के विद्यार्थिया की आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य :–

1. एकल संतान एवं बहुसंतान परिवार के विद्यार्थियो की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. एकल संतान एवं बहुसंतान परिवार के विद्यार्थियो क समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. एकल संतान एवं बहुसंतान परिवार के विद्यार्थियो की आकांक्षा एवं समायोजन में सम्बन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष :–

1. एकल संतान एवं बहुसंतान परिवार के विद्यार्थियो की आकांक्षा मे कोई सार्थक अन्तर नही होता है।
2. एकल संतान एवं बहुसंतान परिवार के विद्यार्थियो के समायोजन में अन्तर होता है।

एकल संतान एवं बहुसंतान परिवार के विद्यार्थियो के आकांक्षा स्तर एवं समायोजन में कोई सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

<u>समस्या कथन :–</u> ''उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं की पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का एक अध्ययन''

(अमरोहा जनपद के संदर्भ में विशेष अध्ययन)

"A study of the impact of their family environment and discipline on the students of upper primary schools".

(Special Study in reference to Amroha district)

अध्ययन के उद्देश्य :–

बिना उद्देश्य के किसी कार्य को करना बालू के घर बनाने के समान है। प्रत्येक अध्ययन के लिए न्यादर्श के चुनाव से लेकर परिणाम निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार उस अनुसंधान कार्य के निर्धारित उद्देश्य ही होते हैं। प्रत्येक शोधकर्त्ता का उद्देश्य उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण द्वारा कुछ सामान्य निष्कर्ष निकालकर ज्ञान को आगे बढ़ाना होता है। परन्तु शोधकर्त्ता का कर्त्तव्य है कि वह देश काल एवं परिस्थितियों की सीमाओं को लांघकर शत प्रतिशत शुद्ध निष्कर्ष निकाले। प्रस्तुत अध्ययन के महत्त्व पर विचार करने से विदित होता है कि समस्या शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करती है। अतः उस ओर कार्य करना समय और शक्तिदोनों का सदुपयोग करना है। समस्या का समाधान करने से पूर्व यह निश्चित करना अनिवार्य है कि उद्देश्य क्या है? वास्तव में उद्देश्य ही अंतिम लक्ष्य को निर्धारित करते हैं। जिसकी ओर किया गया कार्य अग्रसर होता है। किसी अध्ययन के स्वरूप न्यादर्श चयन से लेकर परिणाम एवं निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार उस अनुसंधान कार्य के उद्देश्य ही होते हैं।

अतः इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

1. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुशासन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

चर :–

जिस गुण, विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना हमारा उद्देश्य है, उसे हम चर कहेंगे।

स्वतंत्र चर

जब किसी प्रयोग का आयोजन किसी चर का प्रभाव या परिणाम जाननेहेतु किया जाता है तो वह स्वतंत्र चर कहलाता है। प्रस्तुत शोध में परिवार के स्वरूप का प्रभाव जानने हेतु परीक्षण किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध में परिवार स्वतंत्र चर है।

आश्रित चर

वह चर जिसके आधार पर किसी प्रयोगात्मक चर की प्रभावशीलता का अध्ययन किया जाता है वह आश्रित चर कहलाता है। प्रस्तुत शोध में परिवारका प्रभाव मूल्य, समायोजन एवं आकांक्षा पर अध्ययन किया जा रहा है। अतः आश्रित चर मूल्य, समायोजन एवं आकांक्षा हैं।

शोध में प्रयुक्त चरों की व्याख्या

उच्च प्राथमिक विद्यालय

उच्च प्राथमिक विद्यालय से तात्पर्य कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं से है।

पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन

पारिवारिक अनुशासन, पारिवारिक वातावरण में सम्मिलित होता है। परिवार के वातावरण के अन्तर्गत पूरे घर तथा परिवार का वातावरण आता है। इसके अन्तर्गत माता व पिता के आपसी संबंध, माता–पिता, भाई–बहन तथा सभी बच्चों के बीच आपसी संबंध, पूरे परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण या प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं आचरण, परिवार का व्यावसायिक वातावरण आदि, जैसे– व्यापारी, शिक्षक, इन्जीनियर होना आदि अनेक तत्व आते है।

शैक्षिक उपलब्धि

''शैक्षिक उपलब्धि किसी विषय विशेष अथवा विषयों के समूहों के अवबोध, ज्ञान, समझ या दक्षता की माप प्रदर्शित करती है।''

–फ्रीमैन

साधारण अर्थ में विभिन्न शिक्षा संस्थाओं द्वारा निर्देशित पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर उसके तथ्यों को ग्रहण करने की कुशलता या निपुणता की योग्यता के रूप में हम शैक्षिक उपलब्धि को परिभाषित कर सकते है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि मापने के लिए अनेक प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

परिकल्पना :–

परिकल्पना अनुसंधान की प्रक्रिया का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है। अनुसंधान कार्य परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रियाहै। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और नकोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही संभव है। वास्तव में, परिकल्पना केअभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्न परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं–

1. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध का परिसीमन :–

अनुसंधान के सही परिणाम प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोध क्षेत्रों को एक निश्चित सीमा में बांधा जाए तथा अध्ययन की विश्वसनीयता व वैधता बनाए रखने के लिए भी परिसीमन आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध में समरूप का परिसीमन निम्न प्रकार से किया जायेगा–

1. प्रस्तुत शोध में अमरोहा जनपद की छात्राओं को लिया जायेगा।

2. इस शोध कार्य में 600 छात्राओं को जिनमें से 300 से ग्रामीण और 300 शहरी छात्राओं को लिया जायेगा।

3. सर्वेक्षण के अन्तर्गत अमरोहा जनपद के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों की छात्राओं को लिया जाएगा।

4. इस शोध कार्य में विद्यालय में पढ़ने वाली सभी जाति एवं वर्ग की छात्राओं को लिया जायेगा।

5. प्रस्तुत शोध कार्य में सरल व शुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की विधि :–

अध्ययन विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से है। अतः प्रस्तुत शोध में शोधकत्री ने अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए शोध की प्रकृति को देखते हुये ''वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि'' का प्रयोग किया है।

जनसंख्या का चयन :–

जनसंख्या समय अवधि को ध्यान में रखकर अध्ययन की जनसंख्या की दृष्टि से सीमांकित करते हुये अमरोहा जनपद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के आसपास की जनसंख्या तक सीमित रखा गया है।

प्रतिदर्श :–

सर्वेक्षण के अन्तर्गत अमरोहा जनपद के आठ राजकीय एवं आठ गैर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 में अध्ययनरत 600 छात्राओं का चयनित किया जायेगा।

शोध अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण :–

अनुसंधान के आकड़ों का संकलन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है जिनके सहारे शोधकर्त्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति करसकता है। इन्हीं साधनों को उपकरण कहते हैं।

1. इस शोध अध्ययन की समस्या के आंकड़ों की संग्रहण हेतु शोधकर्ती के द्वारा डॉ0 पंकज कुमार शर्मा की पारिवारिक वातावरण तथा अनुशासन प्रणाली (प्रश्नावली) का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकी विधिया :–

शोधार्थी द्वारा अनुमानकीय सांख्यीकी का प्रयोग किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

चौबे, एस.पी. (1969) भारत में शिक्षा का विकास, इलाहाबाद

सेन्ट्रल बुक डिपो।

पाठक, पी.डी. (1982) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा–2,

विनोद पुस्तक मन्दिर, नवीनतम संस्करण

कपिल, एच.के. (1993) अनुसंधान विधियां, आगरा

विनोद पुस्तक मंदिर।

मुखर्जी, आर. (1997) सामाजिक अनुसंधान तथा सामाजिक सर्वेक्षण,

नई दिल्ली, अग्रवाल पब्लिकेशन अष्टम संस्करण।

सिंह, अरूण कुमार (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन,

तृतीय संस्करण, पृष्ठ सं0 3–4, 514–515

भटनागर, ए0 बी0 (2011) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, मेरठ,

आर0 लाल बुक डिपो, तृतीय संस्करण।

शर्मा, आर0 ए0 (2012) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो संशोधित संस्करण।

बर्निडल, एल. सी. (1995) ''चिल्ड्रन परसनेल्टी एडजस्टमेन्ट एण्ड दी सोसल इकोनॉमी स्टेट्स ऑफ देयर फैमलिज''

ऐडिसन, नेनसी ऐलेन (1996) ''महाविद्यालयी छात्रों के बीच आध्यात्मिकता और धर्मनिष्ठा संबंधी मनोवैज्ञानिक कारणों तथा महाविद्यालयी समायोजन के प्रभावों का अध्ययन''

मीर, सीनाथियां कुरावस्की (1996) ''पूर्व किशोरावस्था में समस्या समाधान व्यूह रचना और व्यवहारगत समायोजन का अध्ययन''

केथकार्ट शेरॉन एव जॉन जोहसन (1996)''मैक्वैवेल्डोरस के यू. एस. प्रबन्धों के जीवन में समायोजन, कारकों और परिणामों का अन्वेष्णात्मक अध्ययन''

केरेन्सी; मार्क डेन (1996) ''अमेरिकन महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के ब्राजीलियन स्नातकीय विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं और सहायता स्त्रोतो ं के सन्दर्भ में लिंग भेद की एक जांच''

हेरटेल, जेम्स ब्रुस (1996) ''प्रथम पीढी, द्वितीय पीढी के महाविद्यालयी विद्यार्थियों का उनके समायोजन में समानताएँ भिन्नताएँ और भिन्नता कारकों का अध्ययन''

मुक्वीन, जॉन (1997) ''संकाय हेतु हस्त कौशल के विकास में सुगमता पूर्वक किशोर अधिगमकर्ताओं के महाविद्यालयी समायोजन का अध्ययन''

बेव, जुडी मौसस (1997) ''व्यावसायिक महिलाओं की सेवानिवृति के संदर्भ में सामान्य विषय और समायोजन का अध्ययन''

ग्रीन्स, डी. एन. (1998)''स्टूडेन्ट फेलियट एण्ड एडजस्टमेन्ट''

भट्ट, सुधा (1991) –
''पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

पाण्डे, आर0के0 (2000) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पूर्व किशोरावस्था की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

बाला, निधि (2000)
''माता के व्यवसाय एवं परिवार की आय का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन ''

पीटर, पॉल (2002)
''महाविद्यालय के चयन एवं उपस्थिति के प्रति अफ्रीकन, अमेरिकन एवं व्हाइट मेरी लेण्ड के माध्यमिक स्कूल के छात्रों की आका क्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन''

शर्मा, मन्जू (2003)
''छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव, समायोजन एवं अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन''

गुप्ता, मधु (2005)
''शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार की प्रकृति, पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावको की सहभागिता के प्रभाव का अध्ययन''

पहाड़ियाँ, के एल. (2006)
''मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन''

ढ़िगड़ा, रजनी, मनहस, सारिका एवं सेठी, नीतू (2007)
''विद्यालय सम्बन्धि गतिविधियों में अभिभावकों की सहभागिता का अध्ययन''

वर्मा, जी. आर. एण्ड बाबू, बी. वी. (2007)
''सन परफॉरमेन्स एण्ड डिजायर्ड फैम`ली साईज इन ए रूरल कम्यूनिटी ऑफ वेस्ट गोदावरी डिस्ट्रीक्ट''

कुमार, हाकम (2009)
''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एकल संतान व बहुसंतान परिवार के विद्यार्थिया की आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''